



# डीएम ने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ सीएचसी छपिया पांच प्रमुख तालाबों का अस्तित्व समाप्त होने एवं भू माफियाओं व पीएचसी मसकनवा का किया औचक निरीक्षण

## सीएचसी अधीक्षक छपिया के विरुद्ध कार्यवाही हेतु शासन को संदर्भित करने के आदेश

गोण्डा । डीएम मार्कण्डेय सख्त निर्देशों के बाद भी सुधार न शाही ने सीडीओ शासक त्रिपाठी, करने पर सीएचसी अधीक्षक ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट सूरज पटेल छपिया डांग आलोक सिंह के के साथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र विरुद्ध कार्यवाही हेतु शासन का छपिया तथा प्राथमिक स्वास्थ्य संदर्भित करने के लिए सीएचसी अधीक्षक डांग आलोक सिंह द्वारा करने पर ज्ञात हुआ कि सीएचसी के निरीक्षण किए जाने के बारे में डीएम को डीएम ने जीवन स्वयं सीएचसी अधीक्षक केन्द्र मसकनवा का औचक को आदेशित किया है। निरीक्षण निरीक्षण किया। निरीक्षण में के दौरान स्वयं सीएचसी अधीक्षक सीएचसी छपिया में डीएम को डांग आलोक सिंह अपनी ड्यूटी तमाम अव्यवस्थाएं मिलीं। डीएम से गैरहरजिर मिले। काफी देर ने पूर्व के निरीक्षणों दिए गए बाद जब सीएचसी अधीक्षक आए

तो डीएम ने उनसे उनके द्वारा की जाने वाली ओपीडी का रजिस्टर मांगा। रजिस्टर का अवलोकन करने पर ज्ञात हुआ कि सीएचसी के निरीक्षण किए जाने के विरोध में भाजयुमे ने उपस्थिति मिले जबकि एमओ डांग जयप्रकाश वर्मा गैरहरजिर तो मिले ही साथ ही उनके द्वारा उपस्थिति रजिस्टर पर 11 अगस्त की उपस्थिति दो दिन पहले ही दर्ज कर दी गई थी। इससे नाराज डीएम ने वहीं पर सीएचसी प्रभारी न किए जाने के बारे में डीएम द्वारा पूछने पर वे निरुत्तर रहे और बहाने बनाते नजर आए।

# द्वारा कष्टा किए जाने के विरोध में भाजयुमो ने दिया ज्ञापन

करनैलगंज(गोंडा) (आरएनएस) करनैलगंज नगर के पांच प्रमुख तालाबों का अस्तित्व समाप्त होने एवं भू माफियाओं द्वारा कब्जा किए जाने के विरोध में भाजयुमे ने उपस्थिति एमओ डांग संदेश सिंह अनुपस्थिति मिले जबकि एमओ डांग जयप्रकाश वर्मा गैरहरजिर तो मिले ही साथ ही उनके द्वारा उपस्थिति रजिस्टर पर 11 अगस्त की उपस्थिति दो दिन पहले ही दर्ज कर दी गई थी। इससे नाराज डीएम ने वहीं पर सीएचसी प्रभारी को जमकर फटकार लगाई।



## **सम्पादकीय**

मौजूदा वक्त में इस  
आंदोलन की सफलता के  
निहितार्थ यही है कि  
समकालीन चुनौतियों का  
मुकाबला सहभागिता,  
जागरूकता व एकता के  
साथ किया जा सकता है।  
आज भले ही हमने  
राजनीतिक आजादी  
हासिल कर ली हो, लेकिन  
आर्थिक व सामाजिक ...

ऐसे वक्त में जब देश आजादी का अमृत—महोत्सव मनाने की ओर कदम रख रहा है, भारत के स्वतंत्रता सेनानियों का पुण्य स्मरण हर भारतीय का फर्ज बनता है। वे तमाम आंदोलन व घटनाएं याद की जानी चाहिए, जिनके चलते आज हम आजादी की खुली हवा में सांस ले रहे हैं। देश की आजादी की लड़ाई में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद भारत छोड़ो आंदोलन ऐसा निर्णायक मोड़ था, जिसने अंग्रेजों को अहसास कराया कि अब भारतीयों को गुलाम बनाकर रखना असंभव है। यही वजह है कि आठ अगस्त को भारत छोड़ो आंदोलन शुरू होने के तुरंत बाद सभी राष्ट्रीय, प्रांतीय तथा स्थानीय कांग्रेस नेताओं की गिरफतारी के बावजूद यह आंदोलन डेढ़ साल तक चला, जिसने ब्रिटिश सत्ता की चूले हिला कर रख दी। सही मायनों में सामूहिक नागरिक अवज्ञा आंदोलन पूरे देश में करो या मरो की तर्ज पर चला। इसका आह्वान अहिंसक आंदोलन के रूप में हुआ था, लेकिन सारे नेताओं को गिरफतार कर लेने के बाद आंदोलन हिंसक भी हुआ, जिसमें उन प्रतीकों व संस्थानों को निशाना बनाया गया जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद के पर्याय थे। सही मायनों में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के मुंबई अधिवेशन में घोषित भारत छोड़ो आंदोलन, दूसरे विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश शासन पर दबाव बनाकर भारत को आजाद करने के लिये बाध्य करने के मकसद से शुरू किया गया था। ब्रिटेन को तब विश्व युद्ध के लिये हर हाल में भारतीय सहयोग की जरूरत थी। बहरहाल, भारत छोड़ो आंदोलन ने जहाँ

# जोडने का वक्त

ब्रिटिश साम्राज्यवाद की नींव हिला दी थी, वहीं भारत को एकता के सूत्र में पिरो दिया था। फिरंगियों को अहसास हो गया था कि ज्यादा समय तक भारतीयों पर शासन नहीं किया जा सकता। एक राष्ट्र के रूप में एकता का स्वरूप इस आंदोलन के दौरान बुलंद हुआ। सही मायनों में देश के भीतर लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास हुआ। उत्तर प्रदेश के बलिया, महाराष्ट्र के सतारा और बंगाल के मिदनापुर में बाकायदा स्थानीय सरकारें स्थापित कर ली गईं। कई स्थानों पर स्थानीय प्रशासन पर कब्जा करके गिरफ्तार कांग्रेसी नेताओं तक को रिहा कर दिया गया। सही मायनों में इस आंदोलन के गहरे निहितार्थ थे, जिसने भारतवासियों को सिखाया कि लोकतांत्रिक ढंग से चलने वाले अहिंसक आंदोलनों के जरिये भी बड़े लक्ष्य हासिल किये जा सकते हैं। यह भी कि बड़े नेताओं की गिरफ्तारी के बाद अनुशासित जनसामान्य किसी आंदोलन को तार्किक परिणति देने में सक्षम है। मौजूदा वक्त में इस आंदोलन की सफलता के निहितार्थ यही हैं कि समकालीन चुनौतियों का मुकाबला सहभागिता, जागरूकता व एकता के साथ किया जा सकता है। आज भले ही हमने राजनीतिक आजादी हासिल कर ली हो, लेकिन आर्थिक व सामाजिक समानता के लक्ष्य अभी अधूरे हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार के मुद्दे ज्वलंत विषय हैं, जिनके लक्ष्य हासिल करने के लिये सरकारों के साथ सामाजिक स्तर पर बड़ी मुहिम की जरूरत है। ऐसे ही अन्य चुनौतियों के मुकाबले को देश को एकता के सूत्र में पिरोने की जरूरत है।

**यादें और  
खारी आंखें**

पूजा उपाध्याय

मुझे ठंड बहुत लगती है। पैर में बहुत ठंड लगती है। हाथ में भी। टेबल पर एक कैंडिल जला ली है। कभी—कभी उस पर हाथ सेंक लेते हैं। लैवेंडर कैंडिल है, कांच के जार में। हाथ लौ के ऊपर रखने के बाद देखती हूँ कि हथेली से लैवेंडर की खुशबू आने लगी है। इस छोटी—सी बात से दिल्ली की कई साल पुरानी सुबह याद आती है। हम शायद नौ बजे ही सीपी पहुँच गए थे। उस वक़्धत कैफे कॉफी डे खुला हुआ था। हमने अपने लिए कॉफी ऑर्डर की। मैं जाडे के दिन होने पर भी बाल सुखाए बिना चली आयी थी। दिल्ली की सर्दियों में घर से निकलने के पहले बाल हेयर ड्रायर से सुखा लेती थी। उस रोज तुमसे मिलना था तो बस जैसे ही मैसेज आया, नहा धो के सीधे निकल लिए। कैफे में बाल खोले बैठी थी। तुमने कॉफी पी और नाश्ते के बाद हाथ धोने गए। वापसी में तुमने बाल हल्के से सहला दिए। उस साल के बाद कई—कई दिन जब तुम्हारी बहुत याद आती तो बालों में उंगलियां उलझाती। सोचती कि मेरे हाथों से तुम्हारे हाथों जैसी खुशबू नहीं आती है।

इन दिनों कागजध की बहुत जरूरत लगती है। कागजध अजीब किछ्स से जिधंदा होता है। खद्धों में खद्धस्तौर से। अ कंट्री विदआउट पोस्ट ऑफिस, आगा शाहिद अली की कविताओं की छोटी-सी किताब है जो इसी नाम की कविता पर रखी गयी है। इस कविता की आखरी पंक्ति हैकृश्ट रेन्स एज आई राइट दिस मैड हर्ट बी ब्रेव ये बहुत साल पहले एक लड़की ने इसका अनुवाद करने को कहा था मुझसे। सिफर्द आखरि के चार शब्द। मेरे पास कोई कांटेक्स्ट नहीं था। अब जब है, कहानी का, कविता का, लड़की का भीज... मेरे पास शब्द नहीं हैं। कि टीस शायद हर भाषा में एक-सी महसूस होती है। वे सारे लोग जो हमारे हिस्से के थे लेकिन हमें कभी नहीं मिले। जो मिले भी तो किसी दोराहे पर बिछड़ गए। मेरी नोट्बुक में तुम्हारे लिखे कुछ शब्द हैं। उन्हें पढ़ते हुए रोना आ जाता है, इसलिए उन शब्दों को आंख चूमने नहीं दे सकती। मैं सिफर्द कहानी लिख सकती हूँ, जिसमें एक कैफे होता है और एक दरबान, कैफे में आगे नोटिस लगा होता है, यहां उदास आंखों वाली लड़कियों का बैठना मना है। तुम जानते हो, वो कैफे मेरा दिल है। और वो दरबान वक़्दूर है। कमजर्फ़। जो कि चूम कर मेरी आंखें कहता है हर बार, इन आंखों का एक ही मिजाज है। उदासी। तुम्हें तो मीठा पसंद है न। तुम भला क्यों चूमोगे मेरी खारी आंखें।

तो इसका मतलब यह नहीं कि आप पीछे हैं। विद्यार्थी की तरह सीखते हुए आगे बढ़ेंगे, तो खुद दुरुस्त होते जाएंगे, सुधार निरंतर जारी रहेगा। ओशो इस प्रवृत्ति को दुरुख-सुख से जोड़ते हैं, कहते हैं, शतुम्हारा दुरुख अत्यन्त गम्भीरता की वजह से है। गम्भीर चित्त से तुम सुखी हो ही नहीं सकते। जिंदगी को एक नाटक या कहानी की तरह लो। उत्सव मनाने वाला चित्त ही सुखी करता है। जगजान्ति है कि बेपरवाह होकर...

अमिताभ र

जाने—माने उद्योगपति रतन टाटा अमूमन एक कहानी सुनाते हैं, शेष व्यक्ति तोता खरीदने गया। पिंजरों में बंद कई तोते थे। उसने एक तोते की कीमत पूछी, तो तोते वाले ने बताया, शपांच हजार रुपये व्यक्ति ने पूछा, इतना महंगा? यह करता क्या है? च तोते वाले ने जवाब दिया कि यह अपनी चोंच से अंग्रेजी टाइप कर सकता है। खैर, व्यक्ति ने दूसरे तोते की कीमत जाननी चाही। तोते वाले ने कहा, श्यह तो दस हजार रुपये का है। क्योंकि यह तीन भासाएं बोल—समझ सकता है। च हैरान व्यक्ति बोला, शुम्झे इतना काम करने वाले तोते नहीं चाहिए। उस आखिरी तोते की कीमत बताइए? च तोते वाला कहने लगा, श्यह तो तीस हजार रुपये का है। च उसने पूछा, श्यह करता क्या है? च तोते वाला बोला, श्मैं नहीं जानता, लेकिन सभी इसे चेयरमैन कहते हैं। च रतन टाटा आगे कहते हैं, श्मैं खुद जानता हूं कि चेयरमैन कुछ नहीं करता, फिर भी, बिंग बॉस वही होता है। च गुलाब और कमल के फूल के बीच कोई मुकाबला नहीं है। क्योंकि हर फूल की अपनी सिफत और खूबसूरती होती है। इसी प्रकार जिंदगी के सफर में भी कोई किसी से आगे या पीछे नहीं है, और न ही कोई किसी से बेहतर है या कमतर। हर इनसान वहीं है, जहां उसे होना चाहिए। हर इनसान अपना अध्यापक है और अपना विद्यार्थी भी। बावजूद इसके आत्मग्लानि से ग्रसित रहता है— कुछ न करने की तो कभी कछु करने की। बेताशा खर्च आत्मग्लानि। किसी से नफरत करने पर आत्मग्लानि, तो किसी से प्यार करने पर भी। कभी—कभार तो ग्लानि पर ग्लानि होने लगती है। ग्लानि का अर्थ है— मन में किसी कार्य को करने का खेद होना। या कहें, अपनी गलती को महसूस करते हुए मन ही मन शिथिलता और खिन्नता पैदा होना। हरदम दूसरों को खुश करने, अच्छा बनने की ओर अपना सब कुछ कायदे से रखने जैसी कोशिशें बीमार तक बना देती हैं। इनसान श्मैं ऐसा क्यों हूं या श्मैं वैसा क्यों हूं के चक्कर में परेशान हो उठता है। वास्तव में, इनसान ऐसे लोगों से धिरा रहता है, जो दूसरों को नियंत्रित करते हैं, उनका मूल्यांकन करते हैं और नियंत्रण आत्मग्लानि का आभास करते रहते हैं। जबकि ऐसे लोग दूसरों को बदलने के तो उतार होते हैं, लेकिन खुद को न बदल सकते हैं, न बदलने की हिम्मत जुटा पाते हैं। सदगुरु जग्मी वासुदेव समझाते हैं, श्संपूर्ण होने के लिए आपको कुछ करने की जरूरत नहीं है, आपको कुछ सोचने की जरूरत नहीं है, आपको अनुभव करने की जरूरत नहीं है। जैसे आप हैं, आप एक सम्पूर्ण जीवन हैं। च अमूमन, दफतर की मेज पर कागजधौं—फाइलों का अम्बार और घर की अलमारी से बाहर गिरते कपड़े देखने—सुनने में सही नहीं लगते, व्यक्तित्व की छिकि को गिराते हैं। लेकिन शोध जताते हैं कि इस लिहाज से लापरवाह लोग खुश्मिजाज होते हैं। न्यूयार्क की शेंजिलोन प्रोफेशनल स्टाफिंग्स के सर्वे के मतभिक साफ—सधरी

कोरोना वैक्सीन से जुड़ी हर शोध स्वागतेय है और उसके लिए वैज्ञानिक सराहना के हकदार हैं। इस समय आम नागरिक को इतना जिम्मेदार बनने की आवश्यकता है कि भीड़ का हिस्सा न बनें, मारक पहनकर ही घर से बाहर निकलें और आपस में पर्याप्त शारीरिक दूरी बनाकर रखें। इन उपायों को अपनाने से कोरोना की तीसरी लहर के खतरे को कम करने में हमें सफलता मिलना तय है हमें यह याद...

कृष्णमोहन झा  
पिछले कुछ महीनों से देश के वैज्ञानिक  
और चिकित्सा विशेषज्ञ लगातार यह आशंका  
व्यक्त कर रहे हैं कि अगस्त में कोरोना की  
तीसरी लहर देश के अनेक हिस्सों में अपना  
असर दिखा सकती है। केरल, कर्नाटक,  
तमिलनाडु सहित कुछ दक्षिणी राज्यों में कोरोना  
संक्रमण के मामलों में अचानक आई तेजी  
उस आशंका को सच साबित करती दिख रही  
है। कोरोना संक्रमण के बढ़ते मामलों को  
देखते हुए उन राज्यों की सरकारों ने ऐतियाती  
कदम उठाना प्रारंभ कर दिया है। केरल सरकार  
ने राज्य में शनिवार और रविवार को लाक  
डाउन लागू करने का फैसला किया है। केरल  
में संक्रमण में अचानक आई तेजी से चिंतित  
केंद्र सरकार ने वहां अपना एक 6 सदस्यीय  
विशेषज्ञ दल भी भेजा था जो स्थिति का  
जायजा लेने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचा  
कि होम आइसोलेशन में रह रहे कोरोना पौष्टिकों  
की निगरानी में लापरवाही राज्य में कोरोना  
संक्रमितों की संख्या में एकाएक हुई बढ़ोतरी  
का एक बना कानून है। दूसरे मन्त्र तकरीबन के

भर की छूट ने केरल में कोरोना संक्रमण की रफ़द्दार में भयावह तेज़ी के ऐसे हालात पैदा कर दिए कि कोरोना से रोजाना संक्रमित होने वाले लोगों की संख्या आठ हजार से बढ़कर 22 हजार हो चुकी है और अब तो यहां तक कहा जाने लगा है कि देश में कोरोना की तीसरी लहर की शुरुआत केरल से ही होने जा रही है। केरल के 14 जिलों में 10 जिले कोरोना प्रभावित हो चुके हैं। उधर केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री ने कहा है कि दिल्ली में पाजिटिविटी रेट 5 प्रतिशत से अधिक हुआ तो सरकार लाक डाउन जैसे कदम उठाने पर गंभीरता से विचार करेगी। देश में रोज कोरोना संक्रमण के जितने मामले अब सामने आ रहे हैं उनमें से आधे से अधिक मामले केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे दक्षिणी राज्यों में पाए जा रहे हैं। यह स्थिति देख कर यही अनुमान लगाया जा सकता है कि निरुसंदेह निकट भविष्य में कोरोना की तीसरी लहर हमारे देश में अपने पैर पसार सकती है। इसीलिए केंद्र सरकार तो पहले ही गंभीर संकरणों को गहर चिरंण ने चाही तैयार किया है।

यंत्रित करने के लिए प्रभावी कदम उठाए गए और इस काम में लापरवाही बरतने वाले विकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की गयी। निश्चित रूप से केंद्र सरकार का यह अमय रहते उठाया गया एक ऐसा कदम है जो कोरोना की तीसरी लहर को भयावह रूप ने से रोकने में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। आज बाब देश के कुछ हिस्सों में कोरोना संक्रमण की जी से बढ़ते आंकड़े को इस वायरस की तीसरी लहर की शुरुआत के रूप में देखा जा रहा है तब सुकून की बात यह है कि राज्य सरकारों ने कोरोना की तीसरी लहर से निपटने के लिए पर्याप्त तैयारियां कर रखी हैं। इसभी राज्य सरकारों ने ऐसे दावे किए हैं। अगर इन दावों पर भरोसा किया जाए तो यह मानना ललत नहीं होगा कि निकट भविष्य में देश में कोरोना की तीसरी आने लहर आने की आशंका च साबित होने पर संक्रमितों को आक्सीजन, ऑस्टर और जरूरी दवाईयों की कमी से नहीं झुक्ना पड़ेगा। कोरोना की तीसरी लहर आने पहले ही सभी राज्य सरकारों को यह निष्पत्ति करना चाहा कि जा कोरोना मरीजों जो तबाही मचाई थी उसका एक प्रमुख कारण यह था कि केंद्र सहित राज्य सरकारों ने भी यह मान लिया था कि हम कोरोना को हराने में कामयाब हो चुके हैं। पूर्व केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ हर्षवर्धन तो विश्व स्वास्थ्य संगठन की बैठक में इस तरह की घोषणा भी कर आए थे। लेकिन जब कोरोना की दूसरी लहर ने तबाही मचाना शुरू किया तब सबको इस कडवीरी हकीकत का अहसास हो गया कि कोरोना की महामारी पर पूरी तरह काबू पा लेने में दुनियावाले कब कामयाब होगी, यह अनुमान लगाना अभी किसी देश के लिए संभव नहीं है। इसलिए अभी हमने कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए आवश्यक ऐहतियाती उपायों में जरा सी भी ढिलाई बरती तो उसकी महंगी कीमत चुकाने के लिए हमें मजबूर होना पड़ सकता है। इसमें दो राय नहीं हो सकती कि कोरोना की पहली लहर के मंद पड़ने के बाद कोरोना अनुशासन के अनुपालन के प्रति हमारी लापरवाही के कारण ही दूसरी लहर ने देश में हाहाकार की स्थिति पैदा कर दी थी इसलिए अब हमें इतना सचेत होना ही चाहिए कि कोरोना की तीसरी लहर ने देश में हाहाकार की स्थिति पैदा कर दी थी इसलिए अब हमें इतना सचेत होना ही चाहिए कि कोरोना की तीसरी लहर आने से पहले ही सभी राज्य सरकारों को यह

**भयभीत न हों लेकिन  
सतर्क तो हो जाएं..**

संक्रमण से बचाव का एकमात्र उपाय काकरण को ही माना जा रहा है। हर राज्य सरकार अपने राज्य में अदि-लोगों के टीकाकरण हेतु युद्ध स्तर न कर रही है परंतु जिस गति से अभियान आगे बढ़ रहा है उसे टीकाकरण का लक्ष्य अर्जित करने वार्ष भी लगा है कि सकते हैं। देश में उपलब्धता और लोगों में टीकाकरण जागरूकता बढ़ेगी तो निश्चित रूप टीकाकरण अभियान सच्चे अर्थों में आगामी काल का रूप ले सकेगा। देश में इस वैक्सीन, कोविशील्ड, स्पृतनिक और क्सीन उपलब्ध हैं। इसके अलावा एंड जानसन की सिंगल डोज वैक्सीन उपरकार ने अनुमति प्रदान कर दी है। ऐसे में यह दावा किया गया है कि वह कोरोना के विरुद्ध 95 प्रतिशत दान करने में सक्षम है। इतना ही और कंपनियां कोरोना रोधी टीके तैयारी कर रही हैं। कोरोना को दिशा में इसे सुखद संकेत के रूप से दर्शाता है। यहाँ से तो यह विषाणु विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक अब इस नतीजे पर भी पहुंचे हैं कि को वैक्सीन और कोविशील्ड की मिक्स डोज कोरोनावायरस विरुद्ध बेहतर सुरक्षा और प्रतिरोधक क्षमता प्रदान कर सकती है। गौरतलब है कि जब टीकाकरण अभियान की शुरूआत हुई थी तब विकिसा विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों ने किसी भी व्यक्ति को एक ही तरह की वैक्सीन के दो डोज दिए लगाए जाने के पक्ष में अपनी राय दी थी। इसी तरह कोविशील्ड की दो डोज वेच के अंतराल को बाद में बढ़ाये जाने का फैसला किया गया था। इसमें कोई संदेह नहीं विद्युत दो डोज के अंतराल को बढ़ाने अथवा दो वैक्सीनों की मिक्स डोज को ज्यादा असरदार पाए जाने संबंधी खबरों ने लोगों को कुछ हद तक भ्रमित भी किया है और उनके में शकाओं को भी जन्म दिया है परंतु हमें यह तो स्थीकार करना ही होगा कि जब तक दुनिया से कोरोनावायरस का नामेनिशान नहीं मिट जाता तब तक वैज्ञानिक अपनी शोधों से न ए न ए नतीजों पर पहुंचते रहेंगे और उनका हर शोध मानव कल्याण वेतनी भावना से प्रेरित है। कोरोना वैक्सीन रेस्टरी द्वारा संख्या दिया जाएगी और उसके लिए





# कलाकार ईश्वर का ही एक अंश है : गिरीश चन्द्र मिश्र आक्सीजन गैस प्लांट की पर मिनट होने वाली उत्पादन क्षमता की जांच करायें: जिलाधिकारी

सीतापुर। संस्कार भारती चन्द्र वर्मा द्वारा रचित पाकर मैं इस पुस्तक का सृजन करने में सफल हो सका वस्तुतः समस्त भाग ईश्वर प्रदर्श ही है। अध्यक्षता कर रहे हैं संस्था के अध्यक्ष इंजीनियर इंजी अंबर ने कहा काव्य मंजूषा कृति का प्रयोग करते हुए सतीश ने इस पुस्तक में जो भी रचनाएं रखी हैं जो कि उसी का प्रतिनिधित्व करता है परिचामतरु उसका हृदय ईश्वरी भावना से ओतप्रतेर रहता है वास्तव में डॉ सतीश जी की पुस्तक में यही भाव परिलक्षित होता है। साहित्यकारों से अच्छा समीक्षक हो ही नहीं सकता उनसे प्रदर्श आलोचना की प्रयोग करते हुए सतीश ने इस पुस्तक में जो भी रचनाएं रखी हैं। यह वे सभी अपने आप में अद्वितीय हैं। इनके शब्द विचार सनातन कवियों जैसे अंकों नीरज वर्मा, हिंदी सभा अध्यक्ष आशीष मिश्र उपस्थित रहे। संचालन सम्पर्क ने भाव विभोर होकर कहा इस जीवन में प्रातः संस्कारों के प्रभाव किया। अतिथियों द्वारा डॉ सतीश

मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश राज्य ललित कला अकादमी के उपाध्यक्ष गिरीश चंद्र मिश्र विचारित करते हुए सतीश ने इस पुस्तक के एक अंश ही करता है जो कि उसी का प्रतिनिधित्व करता है परिचामतरु उसका हृदय ईश्वरी भावना से ओतप्रतेर रहता है वास्तव में डॉ सतीश जी की पुस्तक में यही भाव परिलक्षित होता है। साहित्यकारों से अच्छा समीक्षक हो ही नहीं सकता उनसे प्रदर्श आलोचना की होगा। कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में काव्यगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें श्रेष्ठ सुकवियों व कवियित्रियों द्वारा काव्य पाठ किया गया। जिस क्रम में छाया त्यागी, डॉ मनोज दीक्षित, अवेष्टा शुक्ला, जीवन में प्रातः संस्कारों के प्रभाव किया। अतिथियों द्वारा डॉ सतीश

जीवन में सफल हो सका वस्तुतः समस्त भाग ईश्वर प्रदर्श ही है। अध्यक्षता कर रहे हैं संस्था के अध्यक्ष इंजीनियर इंजी अंबर ने कहा काव्य की अभियांश शब्दशक्ति का प्रयोग करते हुए सतीश ने इस पुस्तक में जो भी रचनाएं रखी हैं जो कि उसी का प्रतिनिधित्व करता है परिचामतरु उसका हृदय ईश्वरी भावना से ओतप्रतेर रहता है वास्तव में डॉ सतीश जी की पुस्तक में यही भाव परिलक्षित होता है। साहित्यकारों से अच्छा समीक्षक हो ही नहीं सकता उनसे प्रदर्श आलोचना की होगा। कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में काव्यगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें श्रेष्ठ सुकवियों व कवियित्रियों द्वारा काव्य पाठ किया गया। जिस क्रम में छाया त्यागी, डॉ मनोज दीक्षित, अवेष्टा शुक्ला, जीवन में प्रातः संस्कारों के प्रभाव किया। अतिथियों द्वारा डॉ सतीश

प्रताप सिंह चौहान, राम किशोर श्रीवास्तव, एपी गौतम, सुमन मिश्रा, राम वैश्य आदि ने काव्य पाठ किया। संरक्षिका, गोष्ठी अध्यक्षता पुष्पा अवस्थी ने सफल कार्यक्रम की बधाइयां देकर आशीर्वाद प्रदान कर संगम के भावी भविष्य की मंगलकामना की। संस्थक के रूप में नवीन द्विवेदी ने उदारभाव से स्वयं को सबसे छोटा बताते हुए साथ बनाये उमर तथा अजय श्रीवास्तव ने वाणी वंदना से कार्यक्रम का आरंभ किया। संस्थक के रूप में नवीन द्विवेदी बबलू, महफूज रहमानी, केपी मिश्रा, अशाक मिश्रा, ए एल गांधी रहे। काव्य गोष्ठी में बारी बारी से समस्त रचनाकारों ने अपनी रचनाएं पढ़ी। जिसमें सूबेदार वर्मा अंजन, शिव

प्रताप

सिंह

चौहान,

राम

किशोर

श्रीवास्तव,

एपी

गौतम,

सुमन

मिश्रा,

राम

वैश्य

आदि ने काव्य पाठ किया।

अन्नपूर्णा साहित्य संगम की 447 वीं सालाहिक काव्यगोष्ठी रिमझिम फुहारों के बीच सावन की घनघोर घटा का आनन्द लेते हुए कजरी व सावन गीतों से सुरुजित अँखलाइन संपादित की गई। जिसकी अध्यक्षता पुष्पा अवस्थी ने सफल कार्यक्रम की बधाइयां देकर आशीर्वाद प्रदान कर संगम के भावी भविष्य की मंगलकामना की। संस्थक के रूप में नवीन द्विवेदी ने उदारभाव से स्वयं को सबसे छोटा बताते हुए साथ बनाये उमर तथा अजय श्रीवास्तव ने वाणी वंदना से कार्यक्रम का आरंभ किया। संस्थक के रूप में नवीन द्विवेदी बबलू, महफूज रहमानी, केपी मिश्रा, अशाक मिश्रा, ए एल गांधी रहे। काव्य गोष्ठी में बारी बारी से समस्त रचनाकारों ने अपनी रचनाएं पढ़ी। जिसमें सूबेदार वर्मा अंजन, शिव

प्रताप

सिंह

चौहान,

राम

किशोर

श्रीवास्तव,

एपी

गौतम,

सुमन

मिश्रा,

राम

वैश्य

आदि ने काव्य पाठ किया।

अन्नपूर्णा साहित्य संगम की 447 वीं सालाहिक काव्यगोष्ठी रिमझिम फुहारों के बीच सावन की घनघोर घटा का आनन्द लेते हुए कजरी व सावन गीतों से सुरुजित अँखलाइन संपादित की गई। जिसकी अध्यक्षता पुष्पा अवस्थी ने सफल कार्यक्रम की बधाइयां देकर आशीर्वाद प्रदान कर संगम के भावी भविष्य की मंगलकामना की। संस्थक के रूप में नवीन द्विवेदी ने उदारभाव से स्वयं को सबसे छोटा बताते हुए साथ बनाये उमर तथा अजय श्रीवास्तव ने वाणी वंदना से कार्यक्रम का आरंभ किया। संस्थक के रूप में नवीन द्विवेदी बबलू, महफूज रहमानी, केपी मिश्रा, अशाक मिश्रा, ए एल गांधी रहे। काव्य गोष्ठी में बारी बारी से समस्त रचनाकारों ने अपनी रचनाएं पढ़ी। जिसमें सूबेदार वर्मा अंजन, शिव

प्रताप

सिंह

चौहान,

राम

किशोर

श्रीवास्तव,

एपी

गौतम,

सुमन

मिश्रा,

राम

वैश्य

आदि ने काव्य पाठ किया।

अन्नपूर्णा साहित्य संगम की 447 वीं सालाहिक काव्यगोष्ठी रिमझिम फुहारों के बीच सावन की घनघोर घटा का आनन्द लेते हुए कजरी व सावन गीतों से सुरुजित अँखलाइन संपादित की गई। जिसकी अध्यक्षता पुष्पा अवस्थी ने सफल कार्यक्रम की बधाइयां देकर आशीर्वाद प्रदान कर संगम के भावी भविष्य की मंगलकामना की। संस्थक के रूप में नवीन द्विवेदी ने उदारभाव से स्वयं को सबसे छोटा बताते हुए साथ बनाये उमर तथा अजय श्रीवास्तव ने वाणी वंदना से कार्यक्रम का आरंभ किया। संस्थक के रूप में नवीन द्विवेदी बबलू, महफूज रहमानी, केपी मिश्रा, अशाक मिश्रा, ए एल गांधी रहे। काव्य गोष्ठी में बारी बारी से समस्त रचनाकारों ने अपनी रचनाएं पढ़ी। जिसमें सूबेदार वर्मा अंजन, शिव

प्रताप

सिंह

चौहान,

राम

किशोर

श्रीवास्तव,

एपी

गौतम,

सुमन

मिश्रा,

राम

वैश्य

आदि ने काव्य पाठ किया।

अन्नपूर्णा साहित्य संगम की 447 वीं सालाहिक काव्यगोष्ठी रिमझिम फुहारों के बीच सावन की घनघोर घटा का आनन्द लेते हुए कजरी व सावन गीतों से सुरुजित अँखलाइन संपादित की गई। जिसकी अध्यक्षता पुष्पा अवस्थी ने सफल कार्यक्रम की बधाइयां देकर आशीर्वाद प्रदान कर संगम के भावी भविष्य की मंगलकामना की। संस्थक के रूप में नवीन द्विवेदी ने उदारभाव से स्वयं को सबसे छोटा बताते हुए साथ बनाये उमर तथा अजय श्रीवास्तव ने वाणी वंदना से कार्यक्रम का आरंभ किया। संस्थक के रूप में नवीन द्विवेदी बबलू, महफूज रहमानी, केपी मिश्रा, अशाक मिश्रा, ए एल गांधी रहे। काव्य गोष्ठी में बारी बारी से समस्त रचनाकारों ने अपनी रचनाएं पढ़ी। जिसमें सूबेदार वर्मा अंजन, शिव

प्रताप

सिंह

चौहान,

राम

किशोर

श्रीवास्तव,

एपी

गौतम,

सुमन

# विककी और सारा की फिल्म द इमोर्टल अश्वत्थामा में दिखेगे सुनील शेट्टी



विककी कौशल और सारा अली खान काफी समय से अपनी फिल्म द इमोर्टल अश्वत्थामा को लेकर चर्चा में बने हुए हैं। हाल में फिल्म के यूरोप शेड्यूल के लिए वीजा नहीं मिलने के कारण फिल्म की शूटिंग टाल दी गई थी। अब फिल्म से जुड़ी एक बड़ी जानकारी सामने आ रही है। खबरों की मानें तो इस फिल्म में दिखाया जाना चाहिए।

रिपोर्ट के मुताबिक, द इमोर्टल अश्वत्थामा में अहम भूमिका निभाने के लिए सुनील शेट्टी नजर आ सकते हैं। मेकर्स ने उन्हें इस फिल्म के लिए अप्रोच किया गया है। एक स्ट्रॉन्ग ने कहा, फिल्म द इमोर्टल अश्वत्थामा बॉलीवुड में बन रही सबसे महंगी फिल्मों में से एक है। फिल्म में जबरदस्त कास्ट शामिल करने के लिए मेकर्स अपनी तरफ से पूरा प्रयास कर रहे हैं।

स्ट्रॉन्ग ने बताया कि इस फिल्म में शामिल होने के लिए सुनील ने भी अपनी दिलचस्पी दिखाई दी है। बताया जा रहा है कि इस समय बातचीत बेहद शुरुआती दौर में है। फिल्म में सुनील के रोल के बारे में काई जानकारी सामने नहीं आई है। आने वाले दिनों में सुनील फिल्म के निर्देशक आदित्य और प्रोड्यूसर रॉनी स्कूवाला से कुछ और मुलाकातें करेंगे। फिल्म की टीम अगस्त के मध्य तक कास्टिंग को पूरा करना चाहती है।

मेकर्स फिल्म की कास्टिंग पूरी करने के बाद सितंबर में शूटिंग शुरू कर सकते हैं। कोरोना महामारी को देखते हुए चार महीने के शेड्यूल में फिल्म को शूट करने की योजना बनाई गई है। आदित्य और उनकी टीम भारत, आइसलैंड और यूरोप में फिल्म की शूटिंग करने की योजना बना रही है। बताया जा रहा है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर के व्यूज़अल देने के लिए फिल्म के पास्ट्र प्रोडक्शन में अधिक समय लगगा। फिल्म 2023 में रिलीज हो सकती है।

यह एक बड़े बजट की फिल्म है। फिल्म में पहली बार विककी और सारा एक साथ दिखेंगे। फिल्म के लिए विककी खूब मेहनत कर रहे हैं। हाल में जानकारी सामने आई थी कि विककी फिल्म के लिए अपना वजन 120 किलो तक बढ़ाएंगे। विककी महाभारत के महान योद्धा अश्वत्थामा का किरदार निभाते हुए दिखेंगे। अश्वत्थामा गुरु द्रोणाचार्य के बेटे थे जिन्हें अमरता का वरदान मिला हुआ था। फिल्म के सीन को फिल्माने के लिए वीएफएक्स टकनीक का इस्टेमाल किया जाएगा।

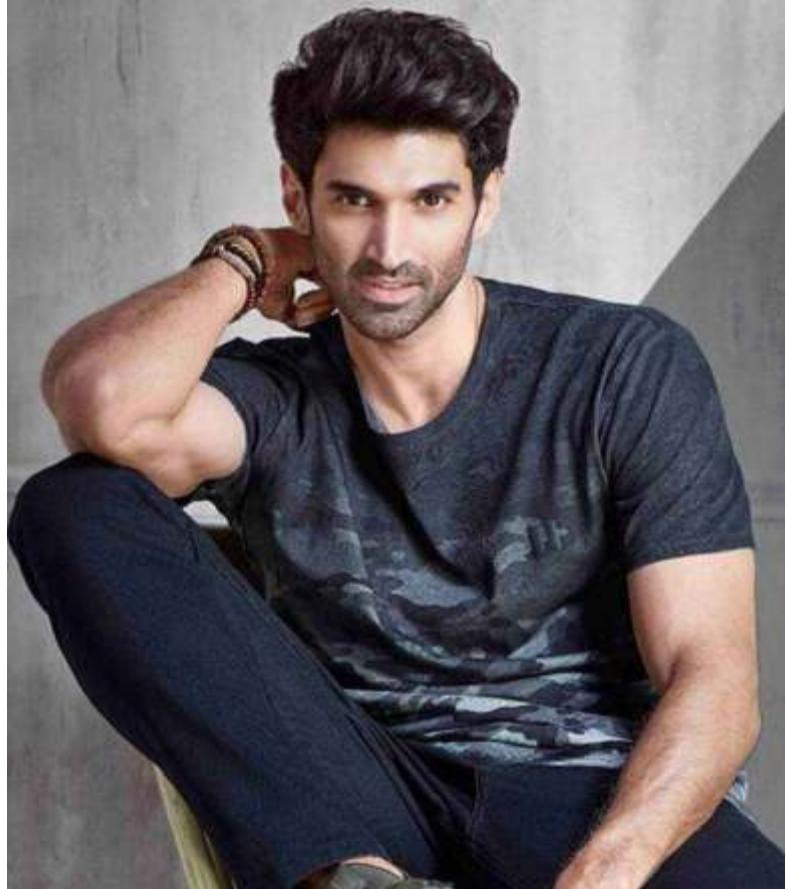
सुनील के वर्कफ्रेंट की बात करें तो वह तेलुगु स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म घनी में दिखने वाले हैं। अभिनेता वरुण तेज इस फिल्म में मुख्य भूमिका में दिखेंगे। वह निर्देशक प्रियदर्शन की मलयालम फिल्म मरकर- द लॉन्च ऑफ अरेबियन सी में भी अभिनय करते नजर आएंगे। इस फिल्म में वह एक एक समुद्री योद्धा की भूमिका अदा करेंगे। सुनील, मिलन लुधारिया की फिल्म तड़प में भी काम कर रहे हैं। फिल्म के जरिए उनके बेटे अहान शेट्टी बॉलीवुड में डेब्यू करेंगे।

## महामारी में ओटीटी एक इन टिप्स को अपनाकर वाशिंग मशीन में आसानी से धोएं जूते बड़ी राहतःप्रिया बापट

वेब-सीरीज सिटी ऑफ ड्रीम्स के दूसरे सीजन की रिलीज के



## आदित्य रॉय कपूर की नई फिल्म का ऐलान, करियर में पहली बार करेंगे डबल रोल



लिए तैयार अभिनेत्री प्रिया बापट ने डिजिटल एप्स की सराहना की है और इसे महामारी के बीच एक बड़ी राहत बताया है। फिल्मों और श्रृंखलाओं के लिए ओटीटी की प्रमुख भूमिका के बारे में बात करते हुए, प्रिया ने कहा, मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है व्यक्तिगत महामारी में एक अच्छी बात यह हुई कि लोगों के पास ओटीटी के साथ सामान देखने और खुद का मनोरंजन करने का विकल्प था। हम अभी भी बहुत सारे थिएटर नहीं हैं जो खुले हैं। ओटीटी एक बड़ी राहत है। अभिनेत्री ने कहा कि वेब-एप्स में योगदान देकर वह खुश हूँ कि हम उस मध्य पर योगदान दे रहे हैं जहां लोग अच्छी चीज़, विभिन्न प्रकार की सामग्री देख सकते हैं और ओटीटी के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि यह परिवार के साथ—साथ प्रत्येक व्यक्ति के लिए भी है। अभिनेत्री ने कहा कि ओटीटी स्वतंत्र रूप से देखने की आजादी देता है। प्रिया ने कहा कि, अगर मैं अपने परिवार के साथ कुछ नहीं देखना चाहती, तो मैं अपने कमरे में बैठकर स्वतंत्र रूप से देख सकता हूँ। मुझे एक साथ बैठने या भीड़ में या 100 या पांच लोगों के साथ रहने की जरूरत नहीं है। मैं सिर्फ अपने लिए उस मनोरंजन का आनंद ले सकती हूँ। और ओटीटी आपको वह देता है। नागेश कुकुनूर निर्देशित सिटी ऑफ ड्रीम्स में अतुल कुलकर्णी, प्रिया बापट और सचिन पिलगांवकर भी हैं। इसे डिज़िन प्लास हॉटस्टार पर रिलीज किया जाएगा।



अगर आपके पास समय की कमी है तो ऐसे में आप अपने जूतों को वाशिंग मशीन में आसानी से धो सकते हैं। हालांकि, मशीन में जूतों को धोते समय अगर अतिरिक्त सतर्कता न बरती जाए तो इससे उनका शेप और लुक बिगड़ सकता है। इसलिए आज हम आपको कुछ ऐसे टिप्प बताने जा रहे हैं, जिन्हें अपनाकर आप अपने जूतों को सुरक्षित तरीके से वाशिंग मशीन में धो सकते हैं।

दाग साफ करें: अगर आपके जूतों पर दाग लगे हुए हैं तो उन्हें मशीन में धोने से पहले दाग को अच्छी तरह से साफ कर दें। इसके लिए आप थोड़ी रूई की सफेद सिरके में भिगोएं, फिर उससे दाग पर हल्के हाथों से रगड़ लें। यकीनन इससे जूतों पर दाग आसानी से छूट जाएगा। वहीं, अगर आपके पास सफेद स्नीकर्स हैं तो उन्हें साफ करने के लिए आप बैकिंग सोडे के धोल का इस्टेमाल कर सकते हैं।

जूतों के फीलों को निकाल दें: अपने जूतों को वाशिंग मशीन में डालने से पहले उसके फीलों को निकाल दें क्योंकि वे अधिक से अधिक गंदगी जमा करते हैं। इसी के साथ अगर इन्हें जूतों के साथ धोया जाए तो इससे वह पूरी तरह से साफ नहीं होते। इसलिए बेहतर होगा कि आप फीलों को निकाल दें और उन्हें साबुन के धोल में कुछ मिनट के लिए भिगो दें, फिर उन्हें पानी से अच्छी तरह धो लें। इसके बाद धुले जूतों में उन्हें डाल दें।

वॉश साइकल को करें सेट: वाशिंग मशीन में जूतों को धोने के लिए उन्हें सबसे पहले एक मेश बैग डालें, फिर मशीन में ठंडे पानी को भरकर उसको एक जेंटल वॉश साइकल पर सेट करें। इसके लिए आप एक स्पिन सेटिंग का चयन कर सकते हैं। इसके बाद मशीन में सीमित मात्रा में सिर्फ कपड़ों को धोने वाला लिविंग डिझर्ज डालें क्योंकि पाउडर डिझर्ज के कान जूतों पर रह सकते हैं। इसी के साथ मशीन में थोड़ा क्लॉथ सॉफ्टपर को जरूर डालें।

ऐसे सुखाएं जूते: जब जूते अच्छे से मशीन में धुल हो जाए तो उन्हें सुखाने के लिए सबसे पहले मेश बैग से बाहर निकालें, फिर अपने जूतों के अंदर पुराने अखबार के गोले बनाकर रख दें क्योंकि अखबार आपके जूते से अतिरिक्त नमी को अवशोषित करने में मदद करेगा। इसके बाद अपने जूतों को एक हवादार करमरे रख दें या फिर हल्की ड्रूप में उन्हें सुखाएं क्योंकि ऐसा करने से आपके जूते जल्दी सूख जाएंगे।

दाग साफ करें: जब जूते अच्छे से मशीन में धुल हो जाए तो उन्हें सुखाने के लिए उन्हें सबसे पहले एक मेश बैग डालें, फिर मशीन में ठंडे पानी को भरकर उसको एक जेंटल वॉश साइकल पर सेट करें। इसके लिए आप एक स्पिन सेटिंग का चयन कर सकते हैं। इसके बाद मशीन में सीमित मात्रा में सिर्फ कपड़ों को धोने वाला लिविंग डिझर्ज डालें क्योंकि पाउडर डिझर्ज के कान जूतों पर रह सकते हैं। इसी के साथ मशीन में थोड़ा क्लॉथ सॉफ्टपर को जरूर डालें।

एक बड़ी बात यह है कि अगर आपके जूतों को वाशिंग मशीन में धोने से पहले उसके फीलों को निकाल दें क्योंकि वे अधिक गंदगी जमा करते हैं। इसी के साथ अगर इन्हें जूतों के साथ धोया जाए तो इससे वह पूरी तरह से साफ नहीं होते। इसलिए बेहतर होगा कि आप फीलों को निकाल दें और उन्हें साबुन के धोल में कुछ मिनट के लिए भिगो दें, फिर उन्हें पानी से अच्छी तरह धो लें। इसके बाद धुले जूतों में उन्हें डाल दें।

उन्होंने कहा, डबल रोल निभाने का मौका मिलने का मतलब है डबल तैयारी और डबल चैलेंज, जिसके लिए आप एक बड़ी बात यह है कि आपके जूतों को वाशिंग मशीन में धोने से पहले उसके फीलों को निकाल दें।

रिपोर्ट के मुताबिक इस फिल्म के लिए निर्माता—निर्देशक ने सिद्धार्थ मल्होत्रा को चुना था। फिल्म के हीरो हैं आदित्य रॉय कपूर, जो पहली बार डबल रोल करते दिखेंगे। उन्होंने अगे लिखा, यह तमिल की हिंदी रीमेक है, जिसका निर्देशन वर्धन केटकर कर रहे हैं। फिल्म की शूटिंग इसी साल सितंबर से शुरू होगी। मुराद ने बताया कि 2019 में थडम की रिलीज के बाद से ही वह इस फिल्म का हिंदी रीमेक बनाना चाहते थे।

आदित्य रॉय कपूर ने कहा, मैं इस जेंटल और प्रेरणादार कहानी का हिस्सा बन बहुत खुश और उत्साहित हूँ। थडम की रोल निभाने के लिए उनकी बेटी बेहतर दिलचस्प है। यह एक मजेद